RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in/
ISSN: Under Process
Vol.: 1, Issue: 1, January-June 2023, pp. 14-19

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में निहित आई.सी.टी. का विश्लेषणात्मक अध्ययन: उच्च प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता के सन्दर्भ में

रमाकान्त यादव[1] एवं डॉ. दिलीप कुमार सिंह[2]

[1] शोध- छात्र एवं [2] असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षाशास्त्र विभाग

सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद वि.वि. प्रयागराज

E-mail: ramaresearcher2311@gmail.com

सारांश

शिक्षण व्यवसाय शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह अध्यापक, विद्यार्थी व पाठ्यक्रम के बीच ऐसे सम्बन्ध का निर्माण करता है जिसमें एक शिक्षक छात्रों और विषयवस्तु को एक साथ लाने का प्रयास करता है अर्थात हम कह सकते हैं कि शिक्षण सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ-साथ छात्रों को मार्गदर्शन करने की एक कठिन कला है तथा इस कला में पारंगतता हासिल करना ही व्यावसायिक दक्षता है। जैसा कि टीमोथी व अन्य (2022), जॉन क्वासी अन्नान (2020) एवं विदुषी विमल (2020) के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि दक्षता को किसी कार्य, गतिविधि को अच्छी तरह से करने की क्षमता के रूप में जाना जा सकता है। वर्तमान समय में जीवन के हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की मांग बढ़ी है कोरोना जैसी भयावह त्रासदी के समय में तो हम पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर निर्भर हो गये थे उस समय जीवन के हर एक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी प्रयोग लोगों ने किया जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गयी। वैसे शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का प्रयोग पहले से ही होता रहा है परन्तु इस त्रासदी के बाद शिक्षा की निर्भरता इस पर और बढ़ गयी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अध्याय-23 "प्रौद्योगिकी का उपयोग और एकीकरण" में आईसीटी के प्रयोग की विस्तृत चर्चा की गयी है तथा साथ ही यह भी बताया गया है कि कैसे एक शिक्षक इस प्रौद्योगिकी के युग में अपने आपको शिक्षण कौशलों में दक्ष रख सकता है क्योंकि आने वाला समय पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर आधारित होगा। अध्यापकों में बिना प्रौद्योगिकी की समझ विकसित किये हम ना ही उनमें दक्षता विकसित कर सकते हैं और ना ही अपने विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर का ज्ञान ही दे सकते हैं इसी को देखते हुए हमारी नयी शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा के हर स्तर पर चाहे शिक्षक हो या छात्र सबके लिए प्रौद्योगिकी की शिक्षा की बात की गयी है।

मुख्य शब्द: ***उच्च प्राथमिक शिक्षक, व्यावसायिक दक्षता, ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020***

प्रस्तावना

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने एवं न्यायपूर्ण राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण

आवश्यकता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है जिसके परिणाम स्वरूप हमारी शैक्षिक प्रणाली भी प्रभावित हो रही है छात्रो को किसी मशीन के कल पुर्जों की भांति तैयार किया जा रहा है ऐसे समय में जब देश की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन महसूस किया गया जिसकी कमी को मानव संसाधन मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) द्वारा नयी शिक्षा नीति-2020 को निर्मित करके पूरा गया है। भारत सरकार द्वारा 2015 में सतत् विकास एजेंडा, 2030 तक सभी के लिए समावेशी और गुणवत्तायुक्त शिक्षा और जीवन पर्यन्त शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य रखा है। आज यह जरुरी हो गया है कि बच्चे को जो सिखाया जा रहा है उसे तो सीखे ही साथ ही सतत सीखते रहने की कला भी सीखें। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए शिक्षको में जिम्मेदारी व दक्षता का होना आवश्यक है। शिक्षण व्यवसाय शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह अध्यापक, विद्यार्थी व पाठ्यक्रम के बीच ऐसे सम्बन्ध का निर्माण करता है जिसमें एक शिक्षक छात्रों और विषयवस्तु को एक साथ लाने का प्रयास करता है अर्थात हम कह सकते हैं कि शिक्षण सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ-साथ छात्रों को मार्गदर्शन करने की एक कठिन कला है तथा इस कला में पारंगतता हासिल करना ही व्यावसायिक दक्षता है। वर्तमान समय में जीवन के हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की मांग बढ़ी है कोरोना जैसी भयावह त्रासदी के समय में तो हम पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर निर्भर हो गये थे उस समय जीवन के हर एक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी प्रयोग लोगों ने किया जिसका परिणाम यह हुआ कि पौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गयी। वैसे शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का प्रयोग पहले से ही होता रहा है परन्तु इस त्रासदी के बाद शिक्षा की निर्भरता इस पर और बढ़ गयी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अध्याय-23 "प्रौद्योगिकी का उपयोग और एकीकरण" में आईसीटी के प्रयोग की विस्तृत चर्चा की गयी है। अध्यापकों में बिना प्रौद्योगिकी की समझ विकसित किये हम ना ही उनमें दक्षता विकसित कर सकते हैं और ना ही अपने विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर का ज्ञान ही दे सकते हैं इसी को देखते हुए हमारी नयी शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा के हर स्तर पर चाहे शिक्षक हो या छात्र सबके लिए प्रौद्योगिकी की शिक्षा की बात की गयी है। आज समाज की कठिनाईयां व्यक्तियों को गम्भीरता के साथ चुनौती दे रही है। इन माँगों व चुनौतियों का दक्षताओं के लिए क्या अर्थ है जिन्हें समाज के व्यक्तियों को हासिल करने की आवश्यकता है? इसके लिए हम आजीवन सीखने के लिए चलने वाली शैक्षिक प्रणालियों व व्यापक लक्ष्यों की पहचान कर सकते हैं। जिसमें 21-वीं सदी के अध्यापकों के लिए व्यावसायिक दक्षताओं की सीमाओं का मूल्यांकन भी कर सकते हैं। 21-वीं सदी के भारत का बहुउद्देश्यीय विकास इस पर निर्भर करेगा कि उसकी वर्तमान पीढ़ी पर जो कौशल, ज्ञान सृजनात्मकता, योग्यता, गतिशीलता आदि के साथ ही साथ आवश्यक मूल्यों व संवेदनशीलता से ओत-प्रोत हों। यह सभी को मान्य है कि किसी भी राष्ट्र या समाज का विकास निर्भर होता है वहाँ की मानवीय सम्पदा पर और वहाँ की मानवीय सम्पदा निर्भर करती वहाँ के अध्यापकों की दक्षता व गुणवत्ता पर।

आज बदलते भारत में होने वाले समिक, आर्थिक व बौद्धिक परिवर्तन समाज के लोगों की अपेक्षाओं के साथ-

साथ वैश्विक परिदृश्य की आवश्यकता के अनरूप समाज के सभी वर्गों व लोगो के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा पर बल देना अत्यंत जरुरी है और इस गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की मांग मुख्य रूप से अध्यापकों की दक्षता व गुणवत्ता पर आधारित होता है। अध्यापकों की व्यावसायिक दक्षता, शिक्षा संस्थाओं की प्रतिबद्धता, अकादमिक व शोध आधारित नवाचार, विकास के साथ-साथ सृजनात्मकतापूर्ण शिक्षण कार्य के क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। इन लक्ष्यों व उद्देश्यों को पूरा करने वाली शिक्षक शिक्षा का गत्यात्मक विकास व उनका सही तरीके से क्रियान्वयन आज की सबसे बड़ी चुनौती है।

इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के भाग तीन अध्याय-20.01 में कहा गया है कि पेशेवरों को तैयार करने के लिए पाठ्यक्रम में तार्किक व अंतर्विषयी सोच, चर्चा, विचार-विमर्श, नवाचार, अनुसन्धान के साथ-साथ व्यावहारिक अभ्यास को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। अध्याय-20.04 में कहा गया है कि शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की आवश्यकता है जिससे यहाँ के अध्यापकों को शिक्षण कार्य में दक्ष बनाया जा सके।

इस नीति के अध्याय-23.2 में कहा गया है कि तकनीकी को समझने और इस्तेमाल करने वाले शिक्षक व उद्यमी जिनमें छात्र भी उद्यमी के रूप में शामिल है की वास्तविक रचना प्रौद्योगिकी की विकास की तीव्र दर को देखते हुए यह निश्चित किया गया है कि आज प्रौद्योगिकी, शिक्षा को कई मायनों में प्रभावित कर रही है जिनमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, ब्लॉक चेन, स्मार्ट बोर्ड एंव स्वचालित कंप्यूटिंग उपकरण छात्रों के विकास के लिए एडाप्टिव कंप्यूटर टेस्टिंग और अन्य प्रकार के सॉफ्टवेयर द्वारा न केवल यह परिवर्तन होगा की विद्यार्थी कैसे सीखता है वरन यह भी परिवर्तित होगा कि अध्यापक कैसे सिखाता है।

अध्याय-23.6 में स्पष्ट किया गया है कि सभी स्तरों पर शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक सॉफ्टवेयर प्रमुख भारतीय भाषाओं में तैयार किए जाएंगे सभी राज्यों तथा एनसीईआरटी, सीबीएसई, एनआईओएस अन्य निकायों या विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित शिक्षण संबंधी ई-कन्टेंट को दीक्षा एवं अन्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संबंधी ऐप्प पर अपलोड किया जाएगा ताकि शिक्षक अपने शिक्षण अधिगम प्रयासों में इस सामग्री को शामिल कर सके तथा आईसीटी आधारित प्लेटफार्म जैसे स्वयं, दीक्षा आदि पर गुणवत्तापूर्ण कंटेंट बना सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अध्याय-24 में प्रौद्योगिकी संभावित चुनौतियों को स्वीकृत करते हुए इससे मिलने वाले लाभों की ओर लोगों का ध्यान केंद्रित किया गया है ऑनलाइन डिजिटल शिक्षा की हानियों को कम करते हुए हम इससे कैसे लाभ उठा सकते हैं इसका प्रारूप तैयार किया गया है साथ ही सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिए मौजूदा डिजिटल प्लेटफॉर्म और क्रियान्वित आईसीटी आधारित शिक्षण को विस्तारित किया जाएगा।

साथ ही अध्याय-24.2 में कहा गया है कि हम ऑनलाइन डिजिटल शिक्षा का लाभ तब तक नहीं उठा सकते जब तक हमारे देश में कंप्यूटर उपकरणों की उपलब्धता की कमी रहेगी या यूं कहें तो डिजिटल अंतर को तब

तक समाप्त नहीं किया जा सकेगा इसलिए यह जरूरी है कि ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी उपयोग की समता पर ध्यान दिया जाए ऑनलाइन शिक्षा के महत्व को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं की सिफारिश की गई है

1. ऑनलाइन शिक्षा के लिए पायलट अध्ययन
2. डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर
3. ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरण
4. सामग्री निर्माण डिजिटल रिपोजिटरी और प्रसार
5. डिजिटल अंतर को कम करना
6. वर्चुअल लैब
7. शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और प्रोत्साहन
8. ऑनलाइन मूल्यांकन और परीक्षाएं
9. सीखने के मिश्रित मॉडल
10. मांगों को पूरा करना

बेरियू टीमोथी व अन्य (2022) ने अपने अध्ययन इनफ्लुएंस ऑफ टीचर्स कम्पीटेंसीज ऑन आईसीटी इंप्लीमेंटेशन इन केन्यान यूनिवर्सिटीज विषय पर अपना अध्ययन किया इन्होंने आईसीटी क्रियान्वयन और शिक्षकों के दक्षताओं के संबंध में केन्या के 475 विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षकों पर अपना सर्वेक्षण किया आंकड़ों के परिणाम स्वरूप शिक्षकों की दक्षता व सॉफ्टवेयर टूल्स के उपयोग के बीच 0.618 का सह-संबंध पाया गया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि इस बात का प्रमाण है कि शिक्षकों की दक्षता एआईसीटी कार्यान्वयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।

जॉन क्वासी अन्नान (2020) ने अपने अध्ययन प्रीपेयरिंग ग्लोबली कॉम्पेटेंट टीचर्स: ए पैराडाइम शिफ्ट फॉर टीचर एजुकेशन इन घाना विषय पर अपना अध्ययन किया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि गुणवत्ता और सकारात्मकता के परिणाम शिक्षक की क्षमता संवेदनशीलता और प्रेरणा से निर्धारित होते हैं जिन्हें शिक्षकों की गुणवत्ता के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है।

विदुषी विमल (2020) ने अपने अध्ययन में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण अभिवृत्ति, जिम्मेदारी की भावना के संबंध में शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन किया तथा परिणाम स्वरूप पाया कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण अभिवृत्ति के बीच धनात्मक सहसंबंध है शिक्षण दक्षता के संबंध में माध्यमिक स्तर के महिला व पुरुष शिक्षकों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया अध्ययन से यह भी पता चलता है कि ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में प्रति दृष्टिकोण में अंतर है ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का दृष्टिकोण

शिक्षण के प्रति बेहतर है।

इस प्रकार टीमोथी व अन्य (2022), जॉन क्वासी अन्नान (2020) एवं विदुषी विमल (2020) के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा में प्रौद्योगिकी कोई मंजिल ना होकर एक यात्रा के समान है और इसके नीतिगत उद्देश्यों को लागू करके इसे विभिन्न परिस्थितियों में तैयार करने के लिए शिक्षक शिक्षकों में दक्षता की आवश्यकता होगी। स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों को ई-शिक्षा की आवश्यकताओं पर ध्यान देने के लिए शिक्षा मंत्रालय में डिजिटल बुनियादी ढांचे डिजिटल सामग्री और क्षमता विकास करने की व्यवस्था करने के उद्देश्य के लिए एक इकाई की स्थापना की बात की गई है क्योंकि प्रौद्योगिकी तेजी से विकसित हो रही है और उच्चतर गुणवत्ता वाले ई-लर्निंग संसाधन को वितरित करने के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी। जो देश के आकार, इक्विटी, विविधता की चुनौतियों को हल कर सके ऐसी प्रौद्योगिकी की शिक्षा को विकसित किया जाए।

अध्ययन का निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में निहित शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता से संबंधित प्रावधानों एवं ऑनलाइन डिजिटल प्रौद्योगिकी से संबंधित दिए गए प्रावधानों से स्पष्ट होता है की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अध्यापकों की व्यावसायिक दक्षता विकास के लिए ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा को शिक्षकों में विकसित करने का प्रयास किया गया है जिससे की वे वैश्विक स्तर पर शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली चुनौतियां का सामना कर सके साथ ही इन चुनौतियों का समाधान भी वैश्विक स्तर पर किए गए विभिन्न अनुसंधान और प्रयोगों के आधार पर कर सके। जिसके लिए अध्यापकों में प्रौद्योगिकी और आईसीटी के ज्ञान की समझ होना जरूरी है आज हम 21-वीं शताब्दी में जी रहे हैं जहां शिक्षा के प्रत्येक स्तर के शिक्षकों में तकनीकी आधारित कार्यों की अधिकता बढ़ गई है चाहे उनके प्रशिक्षण से संबंधित कार्य हो या विद्यालय में प्रबंध, प्रशासनिक एवं शिक्षण कार्य हो सब जगह तकनीकी संबंधी ज्ञान की समझ की आवश्यकता है अतः जब तक शिक्षकों में तकनीकी दक्षता नहीं आएगी तब तक उनमें व्यावसायिक दक्षता की कल्पना करना गलत होगा। इसलिए वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षकों में तकनीकी के उपयोग की दक्षता को विकसित किया जाए, जिससे कि वे अपने अंदर अन्य व्यवसायिक दक्षता को विकसित कर सकें।

सन्दर्भ

अन्नान जॉन क्वासी (2020). प्रीपेयरिंग ग्लोबली कॉम्पेटेंट टीचर्स: ए पैराडाइम शिफ्ट फॉर टीचर एजुकेशन इन घाना, शोध-आलेख, शोध-जनरल *हिंदवी एजुकेशन रिसर्च इंटरनेशनल,* वॉल्यूम-2020 Doi- https://doi.org/10.1155/2020/8441653

एन.सी.टी.ई.(1998). करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर क्वालिटी टीचर एजुकेशन. नयी दिल्ली।

कुलकर्णी, यू.के. (2011).रिलेशनशिप बिटवीन टीचिंग कम्पिटेन्श एंड ऐटीट्यूड टुवर्डस टीचिंग ऑफ बी.एड. ट्रेंड टीचर वर्किंग इन अपग्रेड प्राइमरी स्कूल्स, इंटरनेशनल रिफ्रिड रिसर्च जनरल, आईएसएसएन -0974-2832वैल्यूम. 3 ईश्यू-30, पेज-17-19।

बाबू, बी. प्रसाद एंड राजू, टी.जे.एम.एस. (2013). ऐटीट्युड ऑफ स्टूडेंट टीचर्स टुवर्ड देयर प्रोफेशन. इंटरनेशनल जनरल ऑफ सोशल साईंस एंड इंटरडिसिप्लिनरीरिसर्च. वैल्यूम.2(1) आईएसएसएन- 2277-3630. पेज-1-6.

यादव रमाकान्त एंव सिंह दिलीप कुमार (2022). 21-वीं शताब्दी की चुनौतियाँ और शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता, शोध पेपर जर्नल-*शोध दृष्टि* वाल्यूम-13 जून-2022।

बेरियू टीमोथी, चुन सियोंग एवं अजजेद्दीन बोडाऊआया (2022). इनफ्लुएंस ऑफ टीचर्स कम्पीटेंसीज ऑन आईसीटी इंप्लीमेंटेशन इन केन्यान यूनिवर्सिटीज, शोध- आलेख, शोध-जनरल *हिंदवी एजुकेशन रिसर्च इंटरनेशनल* वॉल्यूम-2022Doi-https://doi.org/10.1155/2022/1370052

विदुषी विमल (2020). *टीचिंग कम्पीटेंस इन रिलेशन टू टीचिंग ट्यूड एटीट्यूड टुवड्र्स टीचिंग एंड सेंस आफ रिस्पांसिबिलिटी एमंग सेकेंडरी स्कूल टीचर्स*, पीएचडी थिसिस शिक्षाशास्त्र संकाय पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़।

शिक्षा नीति (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020,* शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

सिंह, जय प्रकाश (2013). रिलेशनशिप बिटवीन टीचिंग कम्पिटेन्श एंड सटिस्फेक्शनः अ स्टडी अमंग टीचर एडुकेटर्स वर्किंग इन सेल्फ फिनांस कॉलेज इन उत्तर-प्रदेश, *इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च,* 3:5, 2013।

https://www.enpshychlopedia.dictonary.edu.
https://www.shikshaniti2020.edu.in.